वीरगाथा काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

भूमिका :- वीरगाथा काल का समय संवत् क्भ् से क्फ्स्त्रभ् वि. है। इस काल में मुख्य रूप से तीन प्रकार का साहित्य लिखा गया है ।

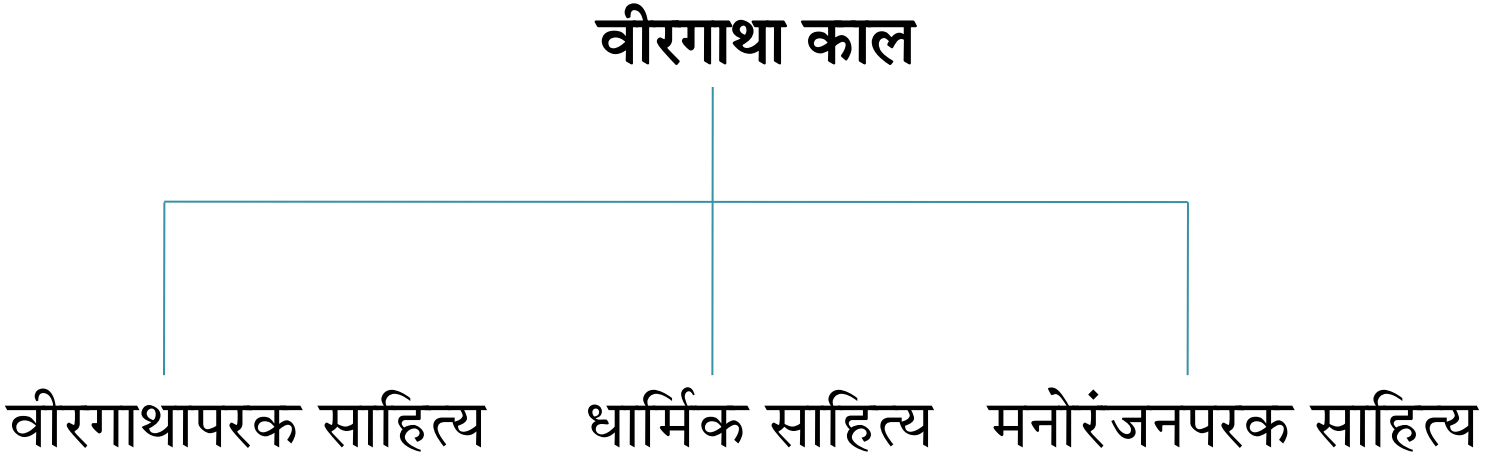

वीरगाथा काल के वीरगाथापरक साहित्य के अन्तर्गत रासो काव्य, धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत सिद्ध-नाथ जैन साहित्य तथा मनोरंजन परक साहित्य के अन्तर्गत विद्यापति की पदावली तथा अमीर खुसरो की पहेलियाँ आदि परिगणित की जाती हैं।

किसी भी काल की साहित्यिक प्रवृत्तियों से अभिप्राय:उस काल में मुखरित होने वाली विशेषताओं से होता है। समाज की परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ साहित्य की प्रवृत्तियों में भी परिवर्तन आता है। आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार-

"जब साहित्य नवीन जातियों के संपर्क में आता है, तब उसमें नई प्रवृत्तियाँ आती हैं, नई आचार-परि□रा का पालन होता है।"

प्रवृत्तियाँ:- वीरगाथा काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं-

क. भावपक्ष

क. संकुचित राष्ट्रीयता:- सारा राष्ट्र छोटे-छोटे टुकड़ो में विभाजित था। राजा लोग छोटे-छोटे राज्यों को ही अपना राष्ट्र समझते थे। इसलिए उनके आश्रय में पलने वाले कवि भी इसी विचारधारा का काव्य में वर्णन करते थे । प्रो. राजनाथ का मत है-

" आज मह 'राष्ट्र' से भारत का जो अर्थ ग्रहण करते हैं, उस समय ऐसी बात नहीं थी...उस समय की राष्ट्र सीमाएं केवल अपने प्रदेश तक ही सीमत थीं। "

ख) जनजीवन की अवहेलना :- इस काल का कवि राजाश्रित होने के कारण जन-जीवन के घात-प्रतिघातों से अछूता ही रहा । इसलिए इस काल के साहित्य में जन-जीवन की अवहेलना का भाव दिखाई देता है।

फ) ऐतिहासिकता का अभाव:- वीरगाथा काल के साहित्य के अंतर्गत इतिहास प्रसिद्ध नायकों को तो स्थान मिला, परन्तु उनका चरित वर्णन ऐतिहासिकता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता जैसे कि पृथ्वीराज रासो में पृथ्वीराज का चरित्र, बीसलदेव रासो में बीसल देव का चरित्र इत्यादि। डॉ. ओम प्रकाश का मत है-

"इन रचनाओं के रचयिताओं का ध्यान इतिहास का आंशिक आश्रय लेकर कल्पना की ओर अधिक रहा है।"

ब) युद्धों का सजीव वर्णनः- वीरगाथा काल राजनैतिक दृष्टि से युद्धों से ग्रस्त रहा है। इस काल का कवि मात्र शŽद रचना करने वाले कवि ही नहीं अपितु सेनापति भी था। इसलिए युद्ध की भयानकता के भु€तयोगी होने के कारण ये कवि युद्ध का सजीव वर्णन करने में पूर्ण रूप से सफल रहे ।

भ) रासो ग्रंथः- इस काल में जो भी साहित्य लिखा गया उसका संबंध रासो शŽद से किसी न किसी प्रकार अवश्य रहा है जैसे :- बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो, खुमान रासो, परमाल रासो आदि।

म) धर्माश्रित साहित्य :- धार्मिक दृष्टि से वीरगाथा काल बहुत ही विश्रृंखल था। सिद्ध, नाथ, जैन धर्म इस काल के समाज में पनप रहे थे। प्रत्येक धर्म विविध उपायों से अपने धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे थे। इन धर्मों के उपदेशकों ने अपने उपदेशों को जनता तक पहुँचाने के लिए काव्य रचना की।

स्त्र) वस्तु वर्णन :- वीरगाथा काल के कवियों का ध्यान कथा के विकास की ओर कम गया और अनेक प्रकार के वर्णनों में उन की रूचि दिखाई देती है। उनके ग्रंथों में रण सज्जा, युद्ध, शत्रु-विजय, ऋतुओं आदि के विस्तृत वर्णन में उनकी काव्य- प्रतिभा विशेष रूप से दिखाई देती है। आचार्य द्विवेदी जी का मत है :-

“ चाहे रूप तथा शोभा का वर्णन हो, चाहे ऋतु वर्णन की उत्फुल्लता का वर्णन प्रसंग हो या युद्धों की भेरी का प्रसंग.. उनकी कविता रूकना ही नहीं चाहती ।”

त) **प्रकृति चित्रण :** इस काल के साहित्य में प्रकृति का आलम्बन और उद्दीपन दोनों रूप से चित्रण मिलता है। नगर,नदी, पर्वत आदि का वर्णन भी शोभनीय बन पड़ा है। कहीं–कहीं प्रकृति चित्रण में नाम परिगणन शैली को भी अपनाया गया है।

–) **फुटकल साहित्य :** वीरगाथा काल में फुटकल साहित्य का भी सृजन हुआ । फुटकाल साहित्य के अंतर्गत मनोरंजन परक साहित्य आता है। खुसरों की पहेलियाँ, विद्यापति की पदावली फुटकल साहित्य के अंतर्गत ही आती हैं।

- **ख) कलापक्ष**

क) भाषा :- इस काल का अधिकतर साहित्य डिंगल-पिंगल भाषा में उपलŽध होता है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, फारसी, अरबी, राजस्थानी, पंजाबी तथा ब्रज भाषा से मिश्रित शŽद मिलते हैं।

क्क) वीर रस की प्रधानता : वीरगाथा काल के साहित्य में वीर रस की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। राजाश्रित कवि का मुख्य लक्ष्य राजाओं की वीरता का गान करना था। युद्ध के प्रति उत्साह की भावना भी वीर रस में रची गई रचनाओं के द्वारा पैदा करते थे ।

क्ख) छंद :- वीर गाथा काल में छंदों का विविधमुखी प्रयोग मिलता है। दोहा,गाथा,रोला,छप्पय आदि छंदों का प्रयोग बड़ी कुशलता और कलात्मकता के साथ किया गया है।

क्प) अलंकार :- रासो काव्य में अलंकारों का प्रयोग पांडित्य प्रदर्शन के लिए नहीं बल्कि स्वाभाविक रूप से काव्य के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए प्रयु€त किया गया हैं। इस काल के साहित्य में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिश्योि€त आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

क्ब) विविध रसों का प्रयोगः- वीर रस के अतिरि€त अन्य रस भी किसी न किसी रूप में वीरगाथा काल में प्रयु€त हुए हैं जिनमें श्रृंगार रस, रौद्र रस, करूण रस , वीभत्स रस इत्यादि आते हैं। डॉ. श्री वास्तवल के अनुसार :-

" चारण कालीन रचनाओं में नवों रसों का प्रयोग किया गया है। "

क्ष) काव्य रूप :–वीर गाथा कालीन रचनाएं मुख्यतः दो काव्य रूपों में प्राप्त होती हैं: प्रबंध काव्य, मुक्तक काव्य। रासो काव्य मुख्यतःप्रबंध काव्य हैं तथा खुसरो की पहेलिया और विद्यापति की पदावली मुक्तक काव्य के अंतर्गत आते हैं।

निष्कर्ष:– अतः वीरगाथा काल के साहित्य में मुखरित होने वाली विशेषताओं पर विहंगम दृष्टिपात के उपरान्त हम कह सकते हैं कि वीरगाथा कालीन साहित्य ऐतिहासिक और साहित्यिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है और समकालीन परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब है।

धन्यवाद।

डॉ. ज्योति गोगिया (विभागाध्यक्ष)

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

हंसराज महिला महाविद्यालय,

जालन्धर। चलभाष--स्त्रत्त्क्व-क्क्त्स्त्रस्त्र

ई-मेल-jyotigogia_70@rediffmail.com